

समाचार वाणी

खबर जो करें असर !

नाशिक | Thursday, 22 October 2026

संघर्ष से आधुनिक खेती तक : माधुरी वळवी ने 'लखपति किसान' कार्यक्रम से बदली अपनी कृषि की दिशा

Sanket Morankar

Published on 21 Oct 2026



महाराष्ट्र के नंदुरबार जिले के धडगांव तालुका स्थित मुंदलवड गांव की सौ. माधुरी भरत वळवी ने पारंपरिक खेती से आगे बढ़कर आधुनिक और व्यावसायिक कृषि की दिशा में उल्लेखनीय कदम उठाए हैं। एक समय उनकी खेती मुख्य रूप से मक्का और ज्वार जैसी पारंपरिक फसलों पर निर्भर थी, जिनसे सीमित आय होती थी। लेकिन वर्ष 2016 में 'लखपति किसान' कार्यक्रम से जुड़ने के बाद उन्हें आधुनिक सब्जी उत्पादन, वैज्ञानिक कृषि तकनीकों और बेहतर फसल प्रबंधन की दिशा मिली। आज उनका अनुभव दिखाता है कि सही प्रशिक्षण, उचित नियोजन और निरंतर मेहनत से खेती की आर्थिक संभावनाओं को बेहतर बनाया जा सकता है।

पारंपरिक खेती से व्यावसायिक सब्जी उत्पादन तक

41 वर्षीय माधुरी वळवी पिछले 15 वर्षों से खेती कर रही हैं। वह बताती हैं कि शुरुआत में पारंपरिक खेती से परिवार को अपेक्षित आय नहीं मिल पाती थी। मक्का और ज्वार की खेती से प्रति एकड़ सालाना लगभग 15,000 से 20,000 रुपये की आय होती थी।

वर्ष 2016 में सीनी के 'लखपति किसान' कार्यक्रम से जुड़ने के बाद उन्हें आधुनिक सब्जी खेती का प्रशिक्षण और मार्गदर्शन मिला। टाटा ट्रस्ट्स के सहयोग से संचालित इस पहल के माध्यम से किसानों को एक ही फसल पर निर्भर रहने के बजाय सालभर आय के कई अवसर विकसित करने के लिए प्रोत्साहित किया जाता है।

प्रशिक्षण और वैज्ञानिक खेती के तरीकों को अपनाते हुए माधुरी ने व्यावसायिक सब्जी उत्पादन शुरू किया। उनके अनुसार, इससे खेती की आय में उल्लेखनीय बदलाव आया और परिवार की आर्थिक स्थिति मजबूत हुई।

तीन एकड़ भूमि पर खेती का नियोजन

माधुरी वळवी के पास कुल तीन एकड़ कृषि भूमि है। इसमें दो एकड़ सिंचित और एक एकड़ असिंचित भूमि शामिल है। उपलब्ध

संसाधनों और मौसम को ध्यान में रखते हुए वह अलग-अलग सब्जियों की खेती करती हैं।

उनकी खेती में मिर्च, टमाटर, बैंगन, पत्तागोभी, मेथी, पालक, धनिया, प्याज, लहसुन और अन्य मौसमी सब्जियां शामिल हैं। विविध फसलें लेने से उत्पादन और बाजार की जरूरतों के अनुसार खेती का नियोजन करने में मदद मिलती है।

आधुनिक तकनीक से पानी और संसाधनों का बेहतर उपयोग

माधुरी ने अपनी खेती में आधुनिक कृषि तकनीकों को अपनाया है। वर्ष 2016 से वह नियमित रूप से ड्रिप सिंचाई का उपयोग कर रही हैं। इसके अलावा, सौर ऊर्जा से चलने वाला पंप, वेंचुरी के माध्यम से फर्टिगेशन, पानी में घुलनशील उर्वरकों का उपयोग, आधुनिक कृषि उपकरण और नियोजित फसल प्रबंधन उनकी खेती के महत्वपूर्ण हिस्से हैं।

उनके कुल कृषि क्षेत्र के लगभग 50 प्रतिशत हिस्से में ड्रिप सिंचाई की सुविधा उपलब्ध है। उनके अनुभव के अनुसार, इससे पानी के उपयोग को बेहतर ढंग से नियंत्रित करने, फसलों तक आवश्यक मात्रा में पानी पहुंचाने और उत्पादन की गुणवत्ता सुधारने में मदद मिली है।

पानी की बचत और उर्वरकों के संतुलित उपयोग पर ध्यान देना टिकाऊ खेती के लिए महत्वपूर्ण है। माधुरी की कृषि पद्धति में इन पहलुओं को प्राथमिकता दी जाती है।

खेती के अर्थशास्त्र में आया बदलाव

माधुरी वळवी के अनुसार, आधुनिक सब्जी खेती से प्रति एकड़ लगभग 70,000 से एक लाख रुपये तक खर्च आता है, जबकि दो से तीन लाख रुपये तक आय प्राप्त हो सकती है। यह आंकड़े फसल, मौसम, बाजार भाव और उत्पादन की परिस्थितियों के अनुसार बदल सकते हैं।

उनका अनुभव बताता है कि खेती में केवल उत्पादन बढ़ाना ही पर्याप्त नहीं है। लागत का नियोजन, पानी और उर्वरकों का उचित उपयोग, फसल का चयन और बाजार की मांग को समझना भी आर्थिक सफलता के लिए महत्वपूर्ण है।

पारंपरिक फसलों से सब्जी उत्पादन की ओर बढ़ने के बाद उनके परिवार को खेती से बेहतर आर्थिक अवसर मिलने लगे। यह बदलाव ग्रामीण क्षेत्रों में कृषि आधारित आजीविका को मजबूत बनाने की संभावनाओं को भी सामने लाता है।

महिला नेतृत्व से किसानों को नई दिशा

माधुरी वळवी की भूमिका केवल अपने खेत तक सीमित नहीं है। 'लखपति किसान' कार्यक्रम के अंतर्गत विलेज इंस्टीट्यूशन लीडर के रूप में काम करते हुए उन्होंने अन्य महिलाओं और किसान परिवारों को आधुनिक कृषि पद्धतियां अपनाने के लिए प्रेरित किया।

वर्तमान में वह 'यहामोगी फार्मर प्रोड्यूसर कंपनी' (FPC) में कार्यकारी निदेशक के रूप में कार्यरत हैं। उनके द्वारा दी गई जानकारी के अनुसार, इस संस्था के माध्यम से किसानों को संगठित करने, कृषि सेवाएं उपलब्ध कराने और सामूहिक विपणन को बढ़ावा देने के प्रयास किए जा रहे हैं।

संस्था की प्रमुख गतिविधियों में शामिल हैं:

- लगभग 3,500 किसान सदस्य संस्था से जुड़े हैं।
- पांच कृषि उपकरण केंद्र संचालित किए जा रहे हैं।
- हर वर्ष 5,000 से अधिक किसानों को कृषि सेवाएं, मार्गदर्शन और तकनीकी सहायता प्रदान की जाती है।
- चार संग्रहण केंद्रों के माध्यम से कृषि उपज की सामूहिक बिक्री की जाती है।
- पांच सदस्यीय निदेशक मंडल में तीन महिला निदेशक शामिल हैं, जिससे महिला नेतृत्व को आगे बढ़ाने का अवसर मिलता है।

इन गतिविधियों का उद्देश्य किसानों को कृषि संसाधनों और सेवाओं तक बेहतर पहुंच दिलाना तथा सामूहिक प्रयासों के माध्यम से उनकी बाजार संबंधी संभावनाओं को मजबूत करना है।

टिकाऊ खेती और सामूहिक विकास का लक्ष्य

माधुरी वळवी जल संरक्षण, पानी की बचत, संतुलित उर्वरक प्रबंधन, आधुनिक सिंचाई तकनीक, सामूहिक कृषि प्रयासों और बाजार से सीधे जुड़ाव को महत्व देती हैं। उनका लक्ष्य केवल अपनी खेती की प्रगति तक सीमित नहीं है, बल्कि आसपास के किसान परिवारों को भी आर्थिक रूप से सक्षम बनाने में योगदान देना है।

उनका सफर यह दर्शाता है कि आधुनिक तकनीक और वैज्ञानिक जानकारी को स्थानीय परिस्थितियों के अनुरूप अपनाकर खेती को अधिक व्यवस्थित बनाया जा सकता है। साथ ही, किसान उत्पादक कंपनियों और सामूहिक विपणन जैसी व्यवस्थाओं से किसानों को संगठित होने और कृषि सेवाओं तक पहुंच बनाने में सहायता मिल सकती है।

अन्य किसानों के लिए प्रेरणादायी संदेश

माधुरी वळवी का मानना है कि आधुनिक तकनीक, सही नियोजन और सामूहिक प्रयासों के बल पर छोटे किसान भी खेती से बेहतर आय की दिशा में आगे बढ़ सकते हैं। वह महिलाओं को कृषि क्षेत्र में नेतृत्व की भूमिका निभाने के लिए प्रोत्साहित करती हैं।

उनकी यात्रा संघर्ष से सीखने, नए तरीकों को अपनाने और अपने अनुभव को समुदाय के साथ साझा करने की कहानी है। आधुनिक खेती के साथ महिला नेतृत्व को जोड़कर माधुरी वळवी ग्रामीण विकास और किसान सशक्तीकरण की दिशा में अपना योगदान दे रही हैं।

नाम : सौ. माधुरी भरत वळवी

गांव : मुंदलवड, तालुका धडगांव, जिला नंदुरबार, महाराष्ट्र

संपर्क: 9404117073

DISCLAIMER: the views/contents expressed/presented herein, within this advertorial and promotional feature are the sole and exclusive responsibility of individual clients/expert/their authorised representative/Sanket Morankar, to which effect, publication house/its representative/affiliates are not responsible/liable whatsoever.